Impact Factor – 6.261 ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

January - 2019

SPECIAL ISSUE- 83

समकालीन हिंदी कथा-साहित्य में विविध विमर्श

खण्ड - एक

(मुस्लिम, आदिवासी, बाल तथा दिव्यांग विमर्श)

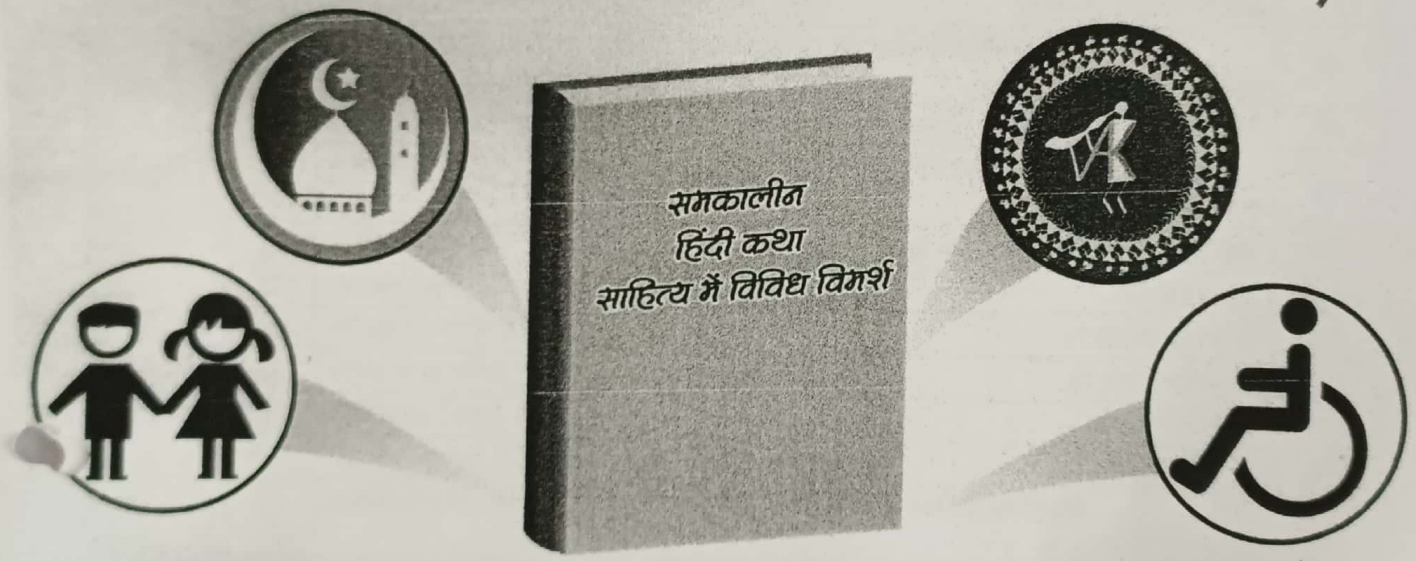

विशेषांक संपादक :
डॉ.सौ. सुरैय्या इसुफअली शेख
असोसिएट प्रोफेसर तथा शोध निर्देशक
अध्यक्षा, हिंदी विभाग,
मा.ह. महाडीक कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
मोडनिंब, तह. माढा, जि. सोलापुर, महाराष्ट्र-भारत.
अध्यक्षा, हिंदी अध्ययन मंडल, सोलापुर विश्वविद्यालय, सोलापुर

मुख्य संपादक :
डॉ. धनराज धनगर

This Journal is indexed in :
- UGC Approved Journal
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)
- Indian Citation Index (ICI)
- Dictionary of Research Journal Index (DRJI)

SWATIDHAN PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue 83 : समकालीन हिंदी कथा- साहित्य में विविध विमर्श
UGC Approved Journal
ISSN : 2348-7143
January-2019

जयश्री राय का उपन्यास तथा समकालीन हिंदी साहित्य में अदिवासी विमर्श

प्रा. रोहिणी रामचंद्र साळवे
एम.ए., बी.एड, एम. फिल, सेट (हिंदी)
दादा पाटील महाविद्यालय, कर्जत.

इकीसवी सदी के उत्तरार्ध में भारत में अनेक सामाजिक आंदोलन उभरे दिखाई देते हैं। उनमें से एक आदिवासी विमर्श प्रमुख हैं। विमर्श का अर्थ विचार विवेचन या परीक्षण से लिया जाता हैं। आदिवासी विमर्श में अपने साथ होनेवाले शोषण तथा भेदभाव को साहित्य में दर्ज किया हैं। आदिवासी से तात्पर्य, प्राचीनकाल से जंगलों में बसनेवाली मनुष्यजाती हैं। आदिवासी समाज में विभिन्न कला रुपों को देखा जाता हैं। नदियों, जंगलों, पहाडों के साथ-साथ उनका खान-पान, रहन-सहन, भाषा, कला आदि को मिलाकर उनकी एक अलग संस्कृति बन गई हैं और यही उनकी पहचान हैं।

इसके साथ ही समकालीन आदिवासी साहित्य और उससे जुडे विभिन्न आंदोलनो को देखने के बाद एक बात तो तय होती है की, बाजरवाद के नाम पर आज लूट का खेल आदिवासियों के साथ सर्वाधिक खेला जा रहा हैं। आदिवासियों की संपत्ती मात्र जल, जंगल और जमीन हैं। परंतु शुरुवात से उन्हें सिर्फ जंगलों में ही खदेडा गया है और अब तो उनके जंगल भी उनसे छिने जा रहे है। इकीसवी सदी की लेखिका जयश्री राय ने अपने उपन्यास 'साथ चलते हुये' में भी दुःखों के साथ-साथ आदिवासियों की त्रासदी का चित्रण बड़ी सजीवता से किया हैं। इस उपन्यास की नायिका अपर्णा तथा अन्य पात्र में कौशल तथा मानिनी प्रमुख है। इस उपन्यास में आदिवासियो के जीवन में मजबूरी तथा जीवन का अर्थ एक ही बताया गया है। कौशल एक ऐसा पात्र है, ज्यों आदिवासियों के जीवन से खुद को जोड़ता है। आज के समय में आदिवासियों की मुख्य समस्या तो यह बनी है कि, उन्हें नक्सली घोषित कर उनके जीवन को ही नष्ट किया जा रहा हैं। यह एक त्रासदी विमर्श के रुप में समकालीन साहित्य के रुप में अभिव्यक्त होने लगी है। जयश्री राय लिखिती है, धरती की यह आदिम संताने सभ्यता और विकास के दोहरे पाट मे घुन की तरह घिसती जा रही हैं।[1]

आदिवासियों का जल, जंगल और जमिन हथियाकार अब उनके जीवन को ही दांव पर लगाया जा रहा हैं। पिछले एक दशक में अकेले झारखंड राज्य से १० लाख से अधिक आदिवासी विस्थापित हो चुके हैं।सरकार के अनुसार राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली में आदिवासी न होने के कारण वहाँ शिक्षण संस्थाओं और नौकरियों में आदिवासीयों के लिए आरक्षण या प्रावधान नहीं है।[2]

आदिवासियों के अस्तित्व का प्रश्न एक संकट के रुप में उपस्थित होता दिखाई देता हैं। और इसी कारण समकालीन आदिवासी साहित्य पर विचार किया जा रहा हैं। आदिवासी जीवन पर हिंदी साहित्य काफी लिखा गया है। संजीव, महुआ माजी, मधुकर सिंह, रणेन्द्र, रमणिका गुप्ता, निर्मला पुतुल आदि, अनेक साहित्यकारों ने आदिवासियों के विस्थापन का दर्द व्यक्त करने का सफल प्रयास किया है। इकीसवीं सदी में भी काफी साहित्य आदिवासियों के जीवन पर लिखा जा रहा है। आदिवासी लेखन विविधताओं से भरा दिखाई देता है। आदिवासी रचनाकारों ने भी अपना अस्तित्व बनाएं रखते हुए कविता का आधार लिया दिखाई देता है। संतली कवयित्री निर्मला पुतुल अपने पिछडे हुए समाज पर लिखती है, ज्यों समाज प्राकृतिक संपदा में जन्मा है, वही किस प्रकार दारिद्रता में जीवन व्यतीत कर रहा है। निर्मला पुतुल इसे इस प्रकार अपने कविता संग्रह 'नगाड़े की तरह बचते शब्द' में व्यक्त करती है।

Scanned with CamScanner

तुम्हारे हाथों बने पत्तल पर भरते हैं पेट हजारों
पर हजारों पत्तल भर नही पाते तुम्हारा पेट
कैसी विडम्बना है कि
जमिन पर बैठ बुनती हो चटाईयाँ
और पंखा बनाते टपकता है
तुम्हारे करियाये देह से टप..... टप..... पसीना।[३]

ये कविताएँ स्वाधीनता के बाद आज भी हमारे राष्ट्रीय विकास पर प्रश्नचिन्ह लगाती है।

आदिवासियों की एक मुख्य समस्या यह भी है की अगर वे खुद की पहचान बनाते है, तो उनकी संस्कृती, रिती रिवाजों पर नष्ट होने का खतरा मंडराता है। इसी कारण आदिवासी विमर्श उनके जीवन को अभिव्यक्त करता हुआ साहित्य का महत्वपूर्ण अंग 'आदिवासी विमर्श' के रुप में समकालीन साहित्य में सामने आता है। आदिवासियों की त्रासदी निम्न कविता में वाहरु सोनवणे लिखते है,

हम स्टेज पर गए ही नही
जो हमारे नाम पर बनाई गई थी।
हमें बुलाया भी नहीं गया।
उंगली के इशारे से
हमारी जगह हमें दिखा दी गई
हम वहीं बैठ गए
हमें खुब शाबासी मिली
और वो स्टेज पर खड़े होकर
हमारा दुख हमें ही बताते रहे
हमारा दुख अपना ही रहा
जो कभी उनका हुआ नही[४]

आदिवासी साहित्य का मुख्य माध्यम ही कविता हैं। इसके साथ-साथ कहानी तथा उपन्यासों में भी उनकी पीडा दिखाई देती हैं। जयश्री राय 'साथ चलते हुए' उपन्यास में लिखती है। ष्एक ही देश, समाज के लोगों के जीवन के बीच ऐसी असमानता, कोई ऐश्वर्य की पराकाष्ठा में जी रहा हैं और कोई दो जून की रोटी के लिए भी मोहताज है।[५]

२१ वीं सदी में भी इनकी स्मृतियों में विशेष बदलात दिखाई नहीं देता। हमें एक बात हमेशा याद रखनी होगी कि, आदिवासी भी एक इंसान है। इनपर सिर्फ साहित्य लिखने से पहले हमें उस समाज को समझना जरुरी है। दूर जंगलो में इनका बसेरा है उनकी अपनी जिन्दंगी और संस्कृती अलग है। रोटी, कपडा, मकान, शिक्षा, आरोग्य जैसी मूलभूत सुविधाएँ इनके नसीब में नहीं है। आज भी इन लोगों के बच्चे भूखे, नंगे दिखाई देते है। उन्हीं के जंगलों में उन्हे ही दफन किया जा रहा है। मनुष्य ही मनुष्य का अमानवीय शोषण और दोहन कर रहा है। ऐश्वर्य की कोख में जन्म लेकर यह निर्धन लोगों को आगे कर बडे लोग अपनी तिजोरियां भर रहे हैं। न्याय का दरवाजा खटखटाने की अगर कोशिश भी करे तो भी उन्हें मार दिया जाता है। पुलिस लॉकअप में उनकी स्त्रियों पर बलात्कार होता है।

सारांश में आज इकीसवीं सदी में हम भारत के प्रगतिशील होने की बात कर रहे हैं, लेकिन आदिवासी एवं पिछड़ी जन-जातियों के अधिकार एवं अस्तित्व की लड़ाई आज भी जारी है। वामन शेलके लिखतें है,

Scanned with CamScanner

सच्चा आदिवासी
कटी पंतंग की तरह भटक रहा है।
कहते है हमारा देश
इक्कीसवीं सदी की और बढ रहा हैं।

इस प्रकार समकालीन साहित्य के केंद्र में आदिवासियों की जीवन स्थितियां आ रही हैं। साहित्य के माध्यम से आदिवासी जीवन के विभिन्न पक्षों पर आज भी विचार किया जा रहा है।

संदर्भ ग्रंथ-

१. जयश्री राय- साथ चलते हुए
२. फारवर्ड प्रेस- बहुजन साहित्य वार्षिक अंक अप्रैल २०१३
३. नगाड़े की तरह बजते शब्द- निर्मला पुतुल
४. आदिवासी साहित्य एवं संस्कृति'- संपा. विशाल शर्मा/दत्ता कोल्हारे
५. जयश्री राय- साथ चलते हुए
६. भारतीय साहित्य और आदिवासी विमर्श- संपा. डॉ. माधव सोनटक्के, डॉ. संजय राठोड

Scanned with CamScanner